राजभवन सूचना परिसर, उत्तराखण्ड
प्रेसविज्ञप्ति

राज्यपाल द्वारा राजभवन में आयोजित चित्रकला प्रदर्शनी का उद्घाटन।

देहरादून 28 मार्च, 2012

उत्तराखण्ड की राज्यपाल श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा ने आज राजभवन के प्रेक्षागृह में आयोजित एक चित्रकला प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर कहा कि कलाकार अपनी कला के माध्यम से समाज में शांति, स्नेह तथा सौंदर्य का संदेश प्रसारित करता है।

उन्होंने कहा कि केरल के संस्कृत के विद्वान प्रोफेसर पी0सी0 देवासिया द्वारा ईसा मसीह के जीवन पर संस्कृत भाषा में रचित महाकाव्य **'क्रेस्टुभागवतम्'** के कतिपय महत्वपूर्ण व प्रमुख अंशों को अपनी तूलिका तथा रंगों की सहायता से सजीव करने का उत्तराखण्ड की युवा महिला कलाकारों का यह प्रयास आश्यर्यजनक रूप से सुखद व सराहनीय है। उन्होंने काव्यात्मक रचनाओं की भावनाओं को कैनवास के माध्यम से अभिव्यक्त करने की इस शैली को आकर्षक व अद्भुत बताया। देश व राज्य की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए कार्यरत संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए राज्यपाल ने इस चित्रकला प्रदर्शनी के आयोजक **'स्नेहिल'** संस्था को राज्य के युवा महिला कलाकारों को प्रोत्साहित करने के प्रयासों की सराहना की।

राज्यपाल ने इन युवा चित्रकारों को अनुभवी, श्रेष्ठ व परिपक्व चित्रकारों की श्रेणी का बताते हुए कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए स्नेहिल संस्था को तीस हजार रूपये की सम्मान राशि का चैक भी प्रदान किया।

अपने उद्बोधन में राज्यपाल ने, चित्रकला प्रदर्शनी के आधार ग्रन्थ **'क्रेस्टुभागवतम्'** के लेखक प्रोफेसर देवासिया जो साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किये जा चुके हैं, द्वारा संस्कृत में रचित इस महाकाव्य की रचना–यात्रा तथा विभिन्न संस्कृतियों व धर्मों के बीच पायी जाने वाली समानता से लोगों को परिचित कराने के लेखक की भावना व उद्देश्यों पर भी प्रकाश डाला।

राज्यपाल ने कला संस्कृति तथा साहित्य को प्रोत्साहित करने के प्रयासों के लिए स्नेहिल संस्था की संरक्षिका डा0 सुधारानी पाण्डे, (कुलपति संस्कृत विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड) तथा **स्नेहिल** संस्था की अध्यक्ष डा0 ममता सिंह सहित सभी को बधाई व शुभकामनाएं दीं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह बहुमूल्य चित्रकला प्रदर्शनी कला समीक्षकों, दर्शकों, लेखकों, तथा कलाकारों के लिए प्रेरणादायक रहेगी।

आगामी सप्ताह में आने वाले गुड फ्राईडे तथा ईस्टर पर्व के उपलक्ष में आयोजित इस चित्रकला प्रदर्शनी को विशिष्ट अतिथि, जॉन फिलीपोसे जो पेशे से इंजीनियर होने के साथ ही उच्च कोटि के चित्रकार भी हैं, ने भी प्रभावी शैली में समारोह को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि धर्म संबन्धी विषयों का चित्रांकन किसी भी कलाकार के लिए बहुत कठिन व जटिल कार्य है। कलाकार के पास अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने की असीमित स्वतंत्रता होती है लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि उसे किसी धर्म, व्यक्ति या संप्रदाय की भावनाओं को आघात पहुंचाने का अधिकार या छूट मिल गयी है।

राज्यपाल ने दीप प्रज्ज्वलित कर परंपरागत रूप से प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी में युवा रचनाकारों द्वारा बनाये गये 26 तैलचित्र प्रदर्शित किये गये हैं।

चित्र प्रदर्शनी के लिए आयोजित समारोह में अतिथियों का स्वागत उद्बोधन व प्रदर्शनी पर प्रकाश डालने की भूमिका डा0 सुधारानी पाण्डे ने निभायी। कार्यक्रम का प्रभावशाली संचालन स्नेहिल संस्था की अध्यक्ष द्वारा किया गया। संस्था की सचिव डा0 पुनीत सैनी ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर आयोजकों द्वारा राज्यपाल को एक तैलचित्र भी भेंट किया गया।

समारोह में राज्यपाल के प्रमुख सचिव श्री अशोक, उत्तराखण्ड उद्यान एवं वानिकी विश्वविद्यालय भरसार, के कुलपति प्रो0 मैथ्यू प्रसाद, राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष श्रीमती सुशीला बलूनी, लोक सेवा आयोग के सदस्य श्री डी0के0 भट्ट, डा0 फारूख़, सविता मोहन, राकेश धवन, राकेश ओबरॉय, साहित्यकार कमलकांत बुधकर सहित अनेक वरिष्ठ साहित्य, कला प्रेमी, समीक्षक बुद्धिजीवी व गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

————0————

सूचना अधिकारी श्री राज्यपाल, उत्तराखण्ड मो0–9456590619 टेली फैक्स 0135–2756172